२२०० वर्ष प्राचीन प्रगट प्रभावी बलसाणातीर्थमंडन



विमल विद्या अनुष्ठान

मंत्र : ।। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री विमलनाथ स्वामिने नमः ।।

।। श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्रसूरि-देवसुन्दरविजय रत्नसुंदरसूरिभ्यो नमः।।



: बलसाणा तीर्थ स्वप्नदृष्टा :
पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजय
विद्यानन्दसूरीश्वरजी म.सा.



: पावन सांनिध्य :
बलसाणातीर्थ मार्गदर्शक, पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजय
रत्नसुंदरसूरीश्वरजी महाराजा
आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद



चलो
हर
बुधवार...
बलसाणा
श्री
विमलनाथ
के द्वार...

बलसाणा मंडन विमलजी !
वंदन तने वंदन तने

जे विमलगुणनी संपदा दोषो अमारा संहरे,
जे विमल मुखमुद्रा थकी अम क्लेश दावानल ठरे,
ते विमल जलना सींचने मुज आतमा विकसित बने,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...१

छे विमल तुज आतम प्रभो ! ने विमलसुखनी संपदा,
ने विमलता स्पर्शावती तुज विमलपदनी देशना,
ते विमलपदने जई वरे जे विमलगुण मंडित बने,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...२

राधा थशुं तने चाहवा जो कृष्ण छो तमे श्यामळा,
धारा थशुं अमे भींजवा जो मेघ छो तमे श्यामळा
तुज श्यामतन आकार लई अंतरमने अंकित बने,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...३

छे श्यामळी तुज मूरती, मने मेघसम लाग्यां करे,
ने नेत्रना शुभतेजथी, मुज आतमा जाग्यां करे,
जपुं रातदिन तुज नामने, मुज देह रोमांचित बने,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...४

छाया प्रभु ! तव श्याम छे, काया विभु ! छे धवलतम,
करुणातणा वादळ तमे, ने सूर्य छो तमे दिव्यतम,
तुज दर्शने भविजीवने, सत्वर परम-समकित मळे,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...५

जे विमलता तुज ब्रह्मनी, मुज वासना दूर करे,
जे विमलता तुज वदननी, बनी शांत मुज आंखो ठरे,
ते विमलताना स्पर्शथी, हरखी हृदय पुलकित बने,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...६

छे कमलसम निर्लेपता ने जलसमी करुणा वहे,
कलकल मधुरी वाणीथी कर्मो तणा जंगल दहे,
निर्मल तमारा गानथी मुज शब्द पण संगीत बने,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...७

बलसाणा तीरथ सोहतुं, तुज विमलगुण सांनिध्यथी,
मन माहरुं ठरतुं अहीं, तुज विमलतम वात्सल्यथी,
छो रत्नसम सुंदर तमे, तुज नामथी वांछित सरे,
बलसाणा मंडन विमलजी ! वंदन तने वंदन तने...८

श्री विमलनाथ जिन चैत्यवंदन



स्तुति

विमलस्वामिनो वाचः कतकक्षोदसोदराः ।
जयन्ति त्रिजगच्चेतो–जलनैर्मल्यहेतवः ।।

चैत्यवंदन

कंपिलपुर विमलप्रभु, श्यामा मात मल्हार;
कृतवर्मा नृप कुलनभे, उगमियो दिनकार...१

लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय;
साठ लाख वरसा तणुं, आयु सुख समुदाय...२

विमल विमल पोते थया ए, सेवक विमल करेह;
तुज पद पद्म विमल प्रति, सेवुं धरी ससनेह...३

स्तवन

हो प्रभुजी ! मुज अवगुण मत देखो.... हो प्रभुजी...
रागदशाथी तुं रहे न्यारो, हुं मन रागे वाळुं;
द्वेष रहित तुं समता भीनो, द्वेष मारग हुं चालुं....
हो प्रभुजी १

मोह लेश फरस्यो नहीं तुजने, मोह लगन मुज प्यारी;
तुं अकलंकी कलंकित हुं तो, ए पण रहेणी न्यारी...
हो प्रभुजी २

तुं हि निराशी भावपद साधे, हुं आशा संग विलुद्धो;
तुं निश्चल हुं चल तुं शुद्धो; हुं आचरणे ऊंधो.
हो प्रभुजी ३

तुज स्वभावथी अवळा मारा, चरित्र सकळ जगे जाण्यां;
एहवा अवगुण मुज अति भारी, न घटे तुज मुख आण्या.
हो प्रभुजी ४

प्रेम नवल जो होई सवाई, विमलनाथ जिन आगे;
"कांति" कहे भवरान ऊतरतां, तो वेळा नवि लागे.
हो प्रभुजी ५

थोय

विमल जिन जुहारो, पाप संताप वारो;
श्यामांब मल्हारो, विश्व कीर्ति विफारो;
योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो;
गुणगण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो...



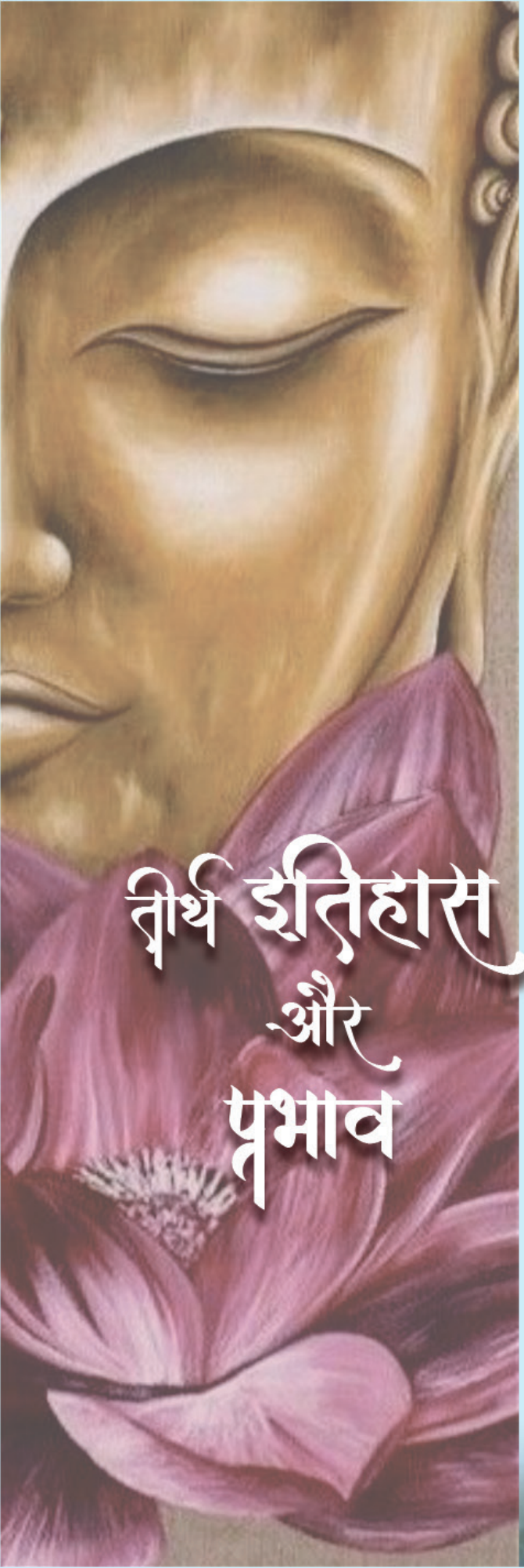

तीर्थ इतिहास और प्रभाव

आज महाराष्ट्र राज्य के धुले जिल्ले में एक सुंदर सा गाँव 'बलसाणा' है और उसी बलसाणा के राजाधिराज यह "विमलनाथ" है कि जिनका जन्म ही विमलता–निर्मलता का सूचकहै ।

यह बलसाणा तीर्थ निसर्ग की रमणीयता में, शान्त वातावरण में अपनी अलौकिकता को निखार दे रहा है... यहाँ दादा विमलनाथ अपनी श्याम छबी से सभी भक्तो के मन को आवर्जित कर लेते है। करीबन २२०० वर्ष से भी प्राचीन यह प्रतिमा कई साधको के श्वास है तो कई भक्तो के दिल की धड़कन है । इनके सांनिध्य में जीवन की दो पल बीताना भी एक परम सौभाग्य है। **इनके चरण में शीष झुकानेवालो के संकल्प सिद्ध हुए है...** नई दिशा मिली है और परम निर्मलता का अनुभव हुआ है ।

श्री विमलनाथ प्रभु की यह प्रतिमा न केवल सुंदर है, किन्तु संकल्पसिद्धिकारक और चमत्कारी भी है। चलो एक सफर करे उन भक्तो के जीवन की जिन्होंने अपनी जुबानी से विमलनाथ प्रभु के चमत्कार की कहानी बताई है...



उफ्... बच गए ! : नवापुर से एक परिवार की स्पेशियल जीप रास्ते पर तेज गति से दौड़ रही थी... चंद मिनिटो में बलसाणा तीर्थ आनेवाला था । जीप के अंदर पूरा परिवार खुश–मिजाज था । और अचानक !!! टक् टक् टक्... धड़ाम ! सन्नाटा !

दो मिनिट के लिए साँसे थम गई... धड़कन तेज हुई... जो आँखो से देखा उसे मानने के लिए दिल तैयार न था... जो सब कुछ एक पलक में बित गया उसे स्वीकारने मन अभी भी सज्ज नहीं हो सका ।

हुआ यूं कि जब जीप अपनी तेज रफतार से दूरी काँट रही थी तब अचानक सामने से एक बडी ट्रक आते दिखी... ट्रक से बचने के लिए जब जीपने Side ली तब उसके आगे का हिस्सा बहुत बूरी तरह से ट्रक को लगा। ऐसी खौफनाक दुर्घटना में भी परिवार के किसी सभ्य को छोटी सी ईजा भी नहीं हुई और उसी जीप में बैठकर पूरा परिवार विमलनाथ प्रभु के दर्शन के लिए गया । जब वहाँ उस जीप को देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए तब परिवार ने उपस्थित सभी को पूरी घटना सुनाई तब सभी का मस्तक अहोभाव से प्रभु विम लनाथ के चरणो में झुक गया । वहाँ तक कि जो ड्राइवर कभी प्रभु के दर्शन नहीं करता... वह भी आज अपने ही जीवन में घटित हुए चमत्कार से प्रभु को नमस्कार कर बैठा ।



वाह ! कैसा चमत्कार ! और कैसा नमस्कार !

प्रभु से बांधी प्रेम की गाँठ : कभी कभी कुछ घटनाँए ऐसी घटित होती है जिसे मानने मन तैयार नहीं होता। मगर व्यक्ति जब उसे खुद महेसूस करती है तो अनुभव के



इस दृढ आधार को कोई नकार भी नहीं सकता ।

ऐसी ही एक घटना एक साध्वी के जीवन में घटित हुई जो हमारी सोचने की क्षमता से परे है । शायद ईसीलिए प्रभु के लिए पंचसूत्र में लिखा है कि – **''अचिंतसत्तिजुत्ता हि ते भगवंतो वीयरागा''** – प्रभु अचिंत्यशक्तिसम्पन्न है ।

यह साध्वीजी भगवंत भावनगर से वडोदरा की ओर विहार कर रहे थे । बीच रास्ते में उन्हें मस्तिष्क में अत्यंत पीडा का अनुभव होने लगा । फोरन उन्हें अस्पताल ले गए । जाँच करवाने पर पता चला कि मस्तिष्क में एक विषैली गाँठ हुई है जो बहुत ही जोखमी है, शल्यचिकित्सा (operation) के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं । मुसीबत बडी थी क्योंकि इस operation में मस्तिष्क के विभाग को खोलकर नस की चिकित्सा करना आवश्यक था । ऐसे समय पर साध्वीजी भगवंत ने बलसाणा के विमलनाथ प्रभु का स्मरण किया और अपने मस्तिष्क की जहरीली गाँठ को भूलकर प्रभु से प्रेम की गाँठ बाँध ली । विमलप्रभु के नाम का जाप शुरु किया और हो गया कमाल ! धीरे–धीरे सर का दर्द उतरने लगा । आज वह साध्वीजी बिना ओपरेशन किये भी प्रसन्नता से जीवन व्यतीत कर रही है, विषैली गाँठ कहाँ गायब हो गई यह तो विमलनाथ प्रभु ही जानते होंगे ।

स्वप्न है या सच ? : अमेरिका में गए हुए श्रावक ने एक दिन स्वप्न में देखा कि एक Blue-Green रंग की बड़ी प्रतिमा है जिसकी कांति अज़ब है, जिसका रूप गज़ब है । पल–दो पल प्रभु के दर्शन में वह श्रावक मग्न हो गए, मगर तुरंत उन्हें यह विचार आया कि यह कौन से भगवान है ? पर उनका यह विचार जहाँ रुके उससे पहेले ही कंकु के अंदर ''१३'' अंक उन्होंने देखा ।



सुबह पत्नी को बात की । पत्नीने कहाँ कि जरुर ही यह विमलनाथ भगवान होंगे । भारत लौटते ही दंपती ने बलसाणा तीर्थ की यात्रा का आयोजन किया । जब बलसाणा के दरबार में गए तो विम लनाथ प्रभु को देखकर उसके हृदय से आवाज़ उठी – ''यह स्वप्न में देखे वो ही भगवान है।'' वाह ! क्या विमलनाथ प्रभु की लीला है ! भक्त को भगवान क्या इस तरह भी बुला सकते हैं ?

छट गया अंधेरा : एक नन्ही सी– प्यारी सी बच्ची... जिसे कुदरत ने सब कुछ दिया था मगर कुदरत ने उसे वह चीझ नहीं दी जिससे वह अपने जीवन की लीला को देख सके, यानी वह जन्म से अंध थी । इस बच्ची को आँख की रोशनी मिले इसलिए उनके पिताजी ने बड़े–बड़े डॉक्टरो से मुलाकात की, मगर सबने हाथ खड़े कर दिए। आखिर जो कार्य अदृश्य शक्ति से संपन्न होनेवाला था उसे भला दुनिया की कौनसी दुसरी शक्ति संपन्न कर सके ? कार्य सूर्य से ही हो सके ऐसा हो उसे भला दियाँ कैसे संपन्न कर सके? अब बस इंतेजारी थी सूर्य के सांनिध्य की जो अंधेरा छटा दे...

और वह मंगल वेला आ गई । गाँव में एक साध्वीजी भगवंत का पदार्पण हुआ । वह लड़की साध्वीजी भगवंत को वंदन करने गई । साध्वीजी को जब पता चला कि यह लड़की जन्म से प्रज्ञाचक्षु है तो साध्वीजी भगवंत ने बलसाणा मंडन श्री विमलनाथ प्रभु के जाप से पानी को मंत्रित कर आँखो पर लगाने की प्रेरणा की और हर पूनम को विमलनाथ प्रभु के दर्शन करने की प्रेरणा की । वह लड़की नियमित जाप करती रही और पूनम के दिन



विमलप्रभु के अंतरमन से दर्शन करती रही । यह सिलसिला एक दिन एक ऐसा चमत्कारिक मोड़ जीवन में लाया जिससे सब ताजुब्ब रह गए । धीरे धीरे लड़की को अस्पष्ट दिखना शुरु हुआ और एक दिन जीवन में ऐसा आ ही गया जब उस लड़की ने प्रत्यक्ष अपनी आँखो से साक्षात् विमलनाथ प्रभु के दर्शन किये। तब उस लड़की की आँखो से बह रहे आँसुओ में कृतज्ञता का गिलापन झलक रहा था ।

ऐसी तो कई घटनाएँ घटित हुई है और आज भी भक्तो के जीवन में घटित हो रही है जो विमलप्रभु के प्रत्यक्षता का प्रमाणपत्र है । यहाँ के अधिष्ठायक देव इतने ही जागरुक है और भक्तो की मनोकामनाओं को पूरे करते रहते है ।

भूगर्भ से मिली हुई इस प्रतिमा का बहुत प्राचीन इतिहास है । २२०० वर्ष से अधिक प्राचीन इस प्रतिमाजी ने जन-जन के हृदय को, कण-कण की ऊर्जा को "विमल-विमल" कर दिया है ।

इस प्रतिमा को एक विशाल मंदिर में बिराजित करने बलसाणा तीर्थ के वर्तमान मार्गदर्शक, पद्मभूषण पुरस्कृत पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद्विजय रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.** की प्रेरणा से गगनचुंबी जिनालय का निर्माण होने जा रहा है । सभी भक्तो के हृदय में उमंग है । इसी उमंग को उत्सव में रूपांतरित करने मंदिर के नवनिर्माण प्रसंग पर बलसाणा के राजाधिराज विमलप्रभु की महिमा गाता यह परिचय मंगल-भेरी के स्वरूप में प्रस्तुत है ।

।।जय जय श्री विमलनाथ।।



पूनममय विमल... विमलमय पूनम...

हे बलसाणामंडन विमलनाथ !

* विलास से विकृत हमारी आँखे अमावस्या है,
करुणा से आर्द्र आपकी आँखे पूनम है...

* कषाय से कलुषित हमारा चहेरा अमावस्या है,
समता से विकसित आपका चहेरा पूनम है...

* अज्ञान से अंधकारमय हमारी चेतना अमावस्या है,
ज्ञान से देदीप्यमान आपकी चेतना पूनम है...

* हमारा संपूर्ण अस्तित्व अमावस्या है,
आपका संपूर्ण प्रभुत्व पूनम है...



अमावस्या से शुरु होती हमारी जीवन यात्रा को
पूनम के मुकाम तक पहुँचाने हमारी हर पूनम को अब हम विमलमय करेंगे...
हम २१ पूनम का संकल्प लेते है कि बलसाणा स्थित
नूतन धर्मशाला में पधारे हूएँ
बलसाणा मंडन, २२०० वर्ष प्राचीन श्री विमलनाथ प्रभु के
दर्शन कर हमारी पूनम विमलमय बनाएँगे ।

हे विमलनाथ प्रभु ! आपके सांनिध्य से अमावस्या मिट जाएँगी...
पूनम खिल जाएँगी...

भव्य तीर्थ निर्माण का सूनहरा अवसर

श्रमण श्रमणी उपाश्रय

स्वाध्याय और साधना की महेंक
जहाँ चारों दिशा में फैलेगी
ऐसा मनोहर होगा साधु भगवंत का उपाश्रय

उपाश्रय Room (7) प्रत्येक — 36L — तकती : 3.6'X1.6'





कंपिलपुर यात्रिक भवन
VIP धर्मशाला

सम्मेतशिखर यात्रिक भवन
VIP धर्मशाला

सुविधा और सुंदरता जहाँ भक्तों के मन को आराम देगी
ऐसी होगी विशाल धर्मशाला

धर्मशाला
Delux AC Room
(72) प्रत्येक

18L

तकती : 3.6'X1.6'

धर्मशाला
Suite Room
(24) प्रत्येक

27L

तकती : 3.6'X1.6'











सर्व साधारण की एक इंट

₹ 13,000

18 इंट का लाभ लेने वाले का नाम तक्ति में लिखा जायेगा...

पूण्यानुबंधी पुण्य कमाने
QR CODE SCAN करे

BALSANA SONG

• पूज्य गुरुदेवश्री के प्रमुख श्रावक गण •

जीवदया प्रेमी, श्रावकरत्न श्रीयुत कुमारपालभाई वि. शाह (कलिकुंड, धोलका)
साधर्मिक वत्सल श्री कल्पेशभाई वि. शाह (अहमदाबाद) ट्रस्टी, शेठ आनंदजी कल्याणजी
डॉ. संजयभाई बी. शाह (सुरत) तपागच्छीय प्रवर समिति के मुख्य श्रावक : 98251 21455
श्री निखिलभाई कुसुमगर (नागपुर) ट्रस्टी, श्री अंतरिक्षजी पार्श्वनाथ जैन तीर्थ : 98222 00138
श्री पलकभाई शाह (अहमदाबाद) सर संचालक, जैन एलर्ट ग्रुप ऑफ इंडिया : 98254 33715
श्री कौशिकभाई संघवी (मुंबई) ट्रस्टी, सर्व सिद्धि दायक ट्रस्ट : 98671 68606

• ट्रस्टीगण संपर्कसूत्र •

श्रीपालभाई मुणोत (धुलिया) : 98230 48882 • महेन्द्रभाई परमार (धुलिया) : 93728 10171
राजेन्द्रभाई भंसाली (धुलिया) : 94229 85799 • जितेन्द्रभाई चोवटीया (धुलिया) : 94225 04500

चेक/ड्राफ्ट/नकद भेजने का स्थल

• BANK DETAIL •
Account Name : SHITALNATH BHAGWAN SANSTHAN

• BANK OF BARODA •
Dhule Branch, Dhule-424001
Account No.: 04770100031123
RTGS/NEFT/IFSC Code : BARB0DHULIA

• YES BANK •
Dhule Branch, Dhule-424001
Account No.: 102494600000025
RTGS/NEFT/IFSC Code : YESB0001024

Cheque/RTGS देनेवालो का 80G का benefit मीलेगा



जाप शुरू करने से पहेले

१२ वार... नवकार महामंत्र...

१२ वार.. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री (श्री संघ के मूळनायक)नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री महावीरस्वामिने नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिने नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्री प्रेमसूरिगुरूभ्यो नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्री भुवनभानुसूरिगुरूभ्यो नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्री मणीभद्रवीराय नमः ।

१२ वार... ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः ।



विमल विद्या तप विधि

१० उपवास, १० बियासने, अंतिम अट्ठम

(२३ दिन) विधि

मूल मंत्र = ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री विमलनाथस्वामिने नमः ।

हररोज २० माला

१२ साथिया

१२ प्रदक्षिणा

१२ लोगस्स का काउस्सग्ग

१२ खमासणा

(विमल विद्या अनुष्ठान हेतु मूर्ती, माला एवं यंत्र प्राप्त करने ट्रस्टी का संपर्क करे)



विशेष सूचना :

जाप करने वालो को यह नियमोका अवश्य पालन करना

* अट्ठम की आराधनापूर्वक जाप करना...
* हररोज १३ माला २१ दिन तक अखंड गीननी है.
* जाप करने वालो को स्वतंत्र लाल माला अवश्य रखनी है.
* माला नीचे रखनी नही.
* २१ दिन बाद छ महीने तक पांच माला, तन्पश्चात् हररोज एक माला अवश्य गीननी.
* आसन पर बैठकर पूर्व या उत्तर दिशा सन्मुख बेठना चाहिए।
* २१ दिन तक ब्रह्मचर्यपालन करे।
* रात्रि भोजन त्याग।
* हो सके तो जाप आयंबिल तप के साथ करे।
* जिन-पूजा नवकारशी करना.
* कार्य सिद्ध होने पर साल में एक बार बलसाणा तीर्थ के दर्शनादि अवश्य करे।
* आपकी अनुभूति दूसरी दश व्यक्तिओं को अवश्य बताईए जिससे अन्य पुण्यशालीओं को जाप की प्रेरणा मिले।
* बलसाणा तीर्थ नायक श्री विमलनाथ भगवानके दर्शन-वंदन-पूजन कर तन-मनके संताप मीटाये.

उपरोक्त जाप करने के पश्चात् तीन संकल्प करे:

१. आप सबकी कृपा से हमारी आपत्ति-संकट-विघ्न दूर हो...

२. अमारी मनोकामना पूर्ण हो...

३. हमे सुख-शांति-समाधि मीले ओर सकल संघ की एकता हो...

जय जिनेन्द्र...



विमल विद्या अनुष्ठान का मंत्र

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं,
ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं,
ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ।

ॐ ह्रीं नमो भगवओ अरहओ विमलस्स
सिज्झउ मे भगवई महई महाविज्जा ।
ॐ नमो भगवओ अरिहओ अमले विमले कमले
कमलिणी निम्मले सव्वट्ठसिद्धे ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा ॥

विमलनाथ दादा के प्रभाव का अनुभव करने बुधवार के दिन
१०८ बार इस मंत्र के साथ विमलनाथ परमात्मा पर
वासक्षेप पूजा एवं पीले फूल से पूजन करे ।

स्तुतिओ का श्रवण करने
QR code scan करे

तीर्थ मार्गदर्शक
पद्मभूषण, पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्विजय
रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.





श्री विमलविद्या पट्टः



ॐ ह्रीं अर्हं ह्रीं ह्रः क्ष्वीं नमो विमलनाथस्वामिने स्वाहा (जनाकर्षणी)

ॐ ह्रीं अर्हं ह्रीं ह्रः क्ष्वीं नमो विमलनाथस्वामिने स्वाहा (जनाकर्षणी) जाप: १०८

ॐ ह्रीं नमो विमल स्वामिने स्वाहा

ॐ ह्रीं नमो विमल स्वामिने स्वाहा (पुस्तकसमर्थनादौ) जाप: १०८

ॐ ह्रीं नमो विमल स्वामिने स्वाहा (अनशनादौ) जाप: १०८

ॐ ह्रीं नमो विमल स्वामिने स्वाहा (स्तम्भनादौ) जाप: १०८

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सः क्ष्रौं क्ष्रीं क्ष्रूं क्ष्रैं क्ष्रौं क्ष्रः असि आउसा नमो नाणस्स सव्वसाहूणं ॥

ॐ नमो महवओ आयरियाणं ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं

ॐ नमो महवओ महाविजयाणं ॐ नमो अवराइयाणं ॐ नमो भद्दाए

ॐ ह्रीं नमो ओहिजिणाणं ॐ ह्रीं नमो परमोहिजिणाणं ॐ ह्रीं नमो सव्वोहिजिणाणं

ॐ ह्रीं नमो अणंतोहिजिणाणं ॐ ह्रीं नमो कुट्ठबुद्धीणं ॐ ह्रीं नमो पयाणुसारीणं

ॐ ह्रीं नमो संभिन्नसोयाणं ॐ ह्रीं नमो बीयबुद्धीणं ॐ ह्रीं नमो पयासाणुसारीणं

ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ॥

एसो पंचनमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

ॐ ह्रीं नमो ओहिजिणाणं ॐ ह्रीं नमो परमोहिजिणाणं ॐ ह्रीं नमो सव्वोहिजिणाणं

ॐ ह्रीं नमो अणंतोहिजिणाणं ॐ ह्रीं नमो कुट्ठबुद्धीणं ॐ ह्रीं नमो पयाणुसारीणं

ॐ ह्रीं नमो संभिन्नसोयाणं ॐ ह्रीं नमो बीयबुद्धीणं ॐ ह्रीं नमो पयासाणुसारीणं

ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ॥

ॐ ह्रीं नमो महवओ महाविजयाणं ॐ ह्रीं नमो अवराइयाणं ॐ ह्रीं नमो भद्दाए



आयोजक

श्री शीतलनाथ भगवान जैन संस्थान, धुलिया संचालित
श्री विमलनाथस्वामी जैन तीर्थ, बलसाणा

LANE NO. 2 DHULE - 424001.
DHULE PEDHI - 02562-299091, 238091

BALSANA. TALUKA: SAKRI 424304. (MAHARASHTRA)
BALSANA PEDHI - 9049101313, 8988841313, 8988851313

www.balsanavimalnath.org

BALSANA LOCATION

Join us on Social Media @balsanatirth

YouTube | facebook | Instagram | twitter

contact@balsanavimalnath.org

Nehaj
9322227209 9322227939